वाचन (Speaking)

भाषा सीखने के लिए चार कौशल – पढ़ना, लिखना, बोलना तथा सुनने की आवश्यकता होती है। जब बालक में इन चार कौशलों का विकास होता है। तभी भाषा का पूर्ण बोध होता है। भाषा और साहित्य एक ही सिक्के के दो पहलू है। साहित्य में पाठ्यवस्तु और भाषा में सम्प्रेषण कुशलता निहित होती है। व्यक्तियों में अन्तःप्रक्रिया तथा विचारों का आदान-प्रदान भाषा के माध्यम से होता है। भाषा में वाचन तथा लेखन सीखना होता है। भाषा कौशल में दो तत्व निहित है। पाठ्यवस्तु तथा सम्प्रेषण इन तत्वों में शिक्षण कौशलों का क्रम बदल जाता है।

वाचन का अर्थ

"वाचन एक कला है। वाचन की जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में आवश्यकता होती है। व्यक्ति का सबसे बड़ा आभूषण उसकी सुसंस्कृत एवं मधुर वाणी है, क्योंकि अन्य सभी आभूषण तो टूट या घिस जाते है किन्तु वाणी सदा बनी रहती है, व्यक्ति का एक मात्र आभूषण उसकी मधुर वाणी है। अमृत भी मधुर वाणी में ही होता है। मनुष्य अपने भावों एवं विचारों को बोलकर अथवा लिखकर व्यक्त करता है भावों एवं विचारों का सम्प्रेषण या प्रकाशन ही रचना है।

Scanned by TapScanner

अतः रचना के दो मुख्य रूप है –
(1) मौखिक (2) लिखित

श्रीमती ओकनर के अनुसार :– "वाचन वह जटिल सीखने की प्रक्रिया है, जिसमें सुनने के गतिवाही माध्यमों का मानसिक पक्षों से सम्बन्ध होता है।"

भाषाओं के विश्लेषण से विदित होता है कि अनेक अक्षरों की ध्वनियां विभिन्न स्थानों पर विभिन्न प्रकार से निकलती है। इसका अर्थ यह हुआ कि अक्षर ध्वनि परिस्थिति अनुसार बदल जाती है। इसलिए इन भाषाओं के विद्वानों ने शुद्ध उच्चारण के लिए नियमों को प्रतिपादित किया है।

परन्तु हिन्दी देवनागरी लिपि में ऐसा नहीं है अक्षरों की ध्वनियाँ नहीं बदलती हैं। इसलिए हिन्दी के शिक्षकों को भाषा अथवा वाचन के लिए अलग से आवश्यकता नहीं होती।

वाचन में शब्दों के उच्चारण का विशेष महत्त्व होता है। शब्दों का शुद्ध उच्चारण होना चाहिए।

Scanned by TapScanner